

जैन विद्या के आयाम भाग-३ पं. दलसुख मालवणिया अभिनन्दन ग्रन्थ(फोल्डर
नं. ००१६८३)

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

विषय-सूची

पं. दलसुख मालवणिया – व्यक्तित्व एवं कृतित्व ----- ९
हिन्दी विभाग

आचारांग एवं कल्पसूत्र में वर्णित महावीर चरित्रों का विश्लेषण एवं उनकी पूर्वापरता का

प्रश्न – के. आर. चन्द्रा----- १

अन्तकृद्दशा की विषय वस्तु-एक पुनर्विचार – सागरमल जैन -----१२

चंद्रप्रज्ञप्ति और सूर्यप्रज्ञप्ति का पर्यवेक्षण – मुनि श्री कन्हैयालालजी ----- १९

अंग आगमों के विषयवस्तु सम्बन्धी उल्लेखों का तुलनात्मक विवेचन – सुदर्शनलाल जैन ----- ५०

श्रमण ज्ञान-मीमांसा – भागचन्द्र जैन भास्कर ----- ८६

बृहद्गच्छ का संक्षिप्त इतिहास – शिवप्रसाद ----- १०५

नाट्यदर्पण पर अभिनवभारती का प्रभाव – काजी अंजुम सैफी -----११८

षट्त्रिंशतिका या षट्त्रिंशतिका-एक अध्ययन – अनुपम जैन एवं सुरेशचन्द्र अग्रवाल ----- १३७

विमलसूरी कृत पठमचरिय में प्रतिमाविज्ञान परक सामग्री – मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी

एवं कमलगिरि ----- १४८

जैनतन्त्र साधना में सरस्वती – मारुतिनन्दन तिवारी एवं कमलगिरि ----- १५८

चिन्तामणि पार्श्वनाथ मन्दिर के तीन जैन प्रतिमा-लेख – अरविन्द कुमार सिंह----- १७२

गुजरात से प्राप्त कुछ महत्वपूर्ण जैन प्रतिमायें – प्रमोदकुमार त्रिवेदी ----- १७४

कालिदास की रचनाओं में अहिंसा की अवधारणा – रविशंकर मिश्र ----- १७८

उग्रादित्याचार्य का रसायन के क्षेत्र में योगदान – नन्दलाल जैन ----- १८४

संडेरगच्छ का इतिहास – शिवप्रसाद----- १९४

सूत्रकृतांग में वर्णित कुछ ऋषियों की पहचान – अरुण प्रताप सिंह ----- २१८

ऋषिभाषित और पालिजातक में प्रत्येक बुद्ध की अवधारणा – दशरथ गौड़ ----- २२७

आगमिक गच्छ-प्राचीन त्रिस्तुतिक गच्छ का इतिहास – शिवप्रसाद ----- २४१

English Section

1. The Rules Concerning Speech (Bhasa) in the Ayaranga & Dasaveyaliya

Sutras – Collette Calliat----- 1

2. Uttarajjhayana Sutta XIV – Usuyarjjarah – K. R. Norman ----- 16

3. Reflections on the Jaina Exgetical Literature – B. K. Khadabadi ----- 27

4. Tirthankaras of the Future – Nalini Balbira----- 34

5. The Isibhasiyai & Pali Buddhist Texts – A Study – C S Upasak ----- 68

6. Asita Devel in Isibhasiyai – Lallanji ----- 74

7. Asrava-How Does it flow? – Alex Wayman----- 88

8. Concept of Jiva (Soul) in Jaina Philosophy – J C Sikdar ----- 96

9. Nataputta in Early Nirgrantha Literature – M A Dhaky----- 120

10. The Concept of Mind in Jainism – T G Kalghatgi-----	125
11. A Propos of the Botika Sect – M. A. Dhaky & S. M. Jain-----	131
12. Reconciliation of Buddhist & Vedantic Notion of Self – Y S Shastri -----	140
13. Paurandara Sutra – El. Franco -----	154
14. On the translation of the Basic Nysya Terms-Paksa, Hetu & Drstana – D D Daye -----	164
15. Philosophy of Acaranga Sutra – Joharimal Parikh-----	174
16. The Date of Kundakundacarya – M A Dhaky-----	187